IJAER/January-February 2024/Volume-13/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

हाड़ौती प्रदेश के वन्य जीवों का तुलनात्मक भौगोलिक अध्ययन

Comparative geographical study of wild animals of Haruauti Region

मुकेश कुमार यादव
शोधार्थी, भूगोल विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. बाबू लाल शर्मा
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

शोध सार

पृथ्वी के जिस भाग पर जीव निवास करता है, उसे जैवमण्डल कहते है और जैवमण्डल को हम जैविक उद्यान के नाम से भी पुकार सकते है। मनुष्य अपने सुख और चैन के लिए प्रकृति का बेतहाशा दोहन करने के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। इसी लापरवाही के कारण विशाल वन क्षेत्र नष्ट हो गए जिसके साथ–साथ वन्य जीव जंतुओं का ह्रास हुआ और कई जंतुओं की उत्तरजीविता ही संकट में पड़ गई।

वन्य जीवों को बचाने एवं संरक्षित करने के लिए देश में अनेक पारिस्थिकीय तंत्रों एवं अभयारण्यों का विकास किया गया है। वर्तमान में हाड़ौती प्रदेश में छः वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र हैं। इनका कुल क्षेत्रफल 2816.49 वर्ग किलोमीटर है जिसमें दो टाइगर रिजर्व क्षेत्र है। हाड़ौती प्रदेश में वन्यजीवों का तुलनात्मक, मानवीय एवं प्राकृतिक संकट प्रदेश में संरक्षण के सुझाव दिए गए हैं।

प्रस्तुत शोध पारिस्थितिकी तंत्र और खाद्य श्रृंखला में उनकी भूमिका को बनाए रखने के लिए पृथ्वी पर जानवरों की आबादी को बनाए रखने के लिए वन्य जीव संरक्षण आवश्यक है। राष्ट्रीय उद्यान, वन और जैवमण्डल ऐसे आरक्षित क्षेत्र है, जहाँ वन्य जीव प्राकृतिक वातावरण में स्वच्छता से रह सकते है और फल–फूल सकते है। प्रदेश के अधिकांश वन्य जीवों में वृद्धि होती जा रही है जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न संरक्षण की योजनाएं एवं जागरूकता का ही परिणाम हैं। हाड़ौती प्रदेश के वन्य जीव संरक्षण क्षेत्रों का विकास ही यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति के संरक्षण को आधार प्रदान कर लुप्त होती वन्य जीव प्रजातियों को बचाने में सफल हो सकता है।

सांकेतीक शब्द :–जैव विविधता, पारिस्थितिकी तत्रं, अभयारण्य, उत्तरजीविता, संरक्षण।

परिचय

प्रकृति ने पृथ्वी पर जीव की उत्पति से लेकर आज तक जैव–विविधताओं की एक लम्बी श्रृंखला तैयार की है तथा जैव विकास का अनोखा इतिहास रचा है। वन्य प्राणी पर्यावरण के अनिवार्य अंग है। मनुष्य प्रकृति की अनमोल रचना है। वह जहाँ प्रकृति पर निर्भर है वहीं उसने प्रकृति में उपलब्ध वस्तुओं और साधनों को बड़ी कुशलतापूर्वक अपने सुख व आराम के लिए उपयोग किया है। मनुष्य अपने सुख और चेन के लिए प्रकृति का बेतहाशा दोहन किये जा रहा है जिसका दुष्परिणाम प्राकृतिक असंतुलन के रूप में स्पष्ट है। फलस्वरूप प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया। किन्तु सिमटते प्राकृतिक परिवेश, अवैध शिकार, तीव्र औद्योगिकीकरण, खाल, मांस, हड्डी, दांत आदि की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तस्करी की वजह से आज वन्य जीव–जन्तुओं का ह्रास हुआ और कई जंतुओं की उत्तरजीविता ही संकट में दिखाई दे रही है। विश्व सहित भारत में भी वन्य जीवों की कई जातियां विलुप्त हो चुकी है और कुछ जातियां विलुप्त होने की स्थिति में है।

भारत में पेड़–पौधों एवं वन्य जीवों की कुल 687 प्रजातियाँ विलुप्त के कगार पर है इनमें से स्तनपायी की 96, पक्षियों की 67, रेंगने वाले जीवों की 25, मछलियों की 64 एवं रीढ़रहित जीवों की 213 प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं। वन्य जीवों को बचाने एवं संरक्षित करने के लिए देश में अनेक पारिस्थिकीय तंत्रों एवं अभयारण्यों का विकास किया गया है।

राजस्थान में स्थित वन्य जीवों के आश्रय स्थल चार वर्गों में विभक्त किये जा सकते हैं बाघ संरक्षण क्षेत्र चार है जिन में सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान, सणथंभौर टाइगर रिजर्व, हिल्स टाईगर रिजर्व अभयारण्य रामगढ़ विषधारी टाईगर रिजर्व, है

हाड़ौती प्रदेश में छः वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र है। जिनका कुल क्षेत्रफल 2816.49 वर्ग कलोमीटर है। जिसमें दो टाइगर रिजर्व क्षेत्र है, तीन अभयारण्य चंबल राष्ट्रीय घड़ियाल अभयारण्य, जवाहर सागर वन्य जीव अभयारण्य एवं शेरगढ़ वन्य जीव अभयारण्य है जिनका क्षेत्रफल क्रमशः 564.3, 194.59 एवं 98.7 वर्ग किलोमीटर है। इनके अलावा इस प्रदेश में सोरसन वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र भी स्थापित है।

हाड़ौती प्रदेश के वन्य जीव संरक्षण क्षेत्रों का विकास ही यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति के संरक्षण को आधार प्रदान कर लुप्त होती वन्य जीव प्रजातियों को बचाने में सफल हो सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. हाड़ौती प्रदेश के वन्यजीवों का तुलनात्मक अध्ययन करना है।
2. हाड़ौती प्रदेश के वन्यजीव पर मानवीय एवं प्राकृतिक संकट का अध्ययन ।
3. हाड़ौती प्रदेश में वन्य जीव संरक्षण हेतु सुझाव।

आँकड़ों का संकलन व आधार

प्रस्तुत अध्ययन में संबंधित आँकड़ों को विभिन्न आरेखों व मानचित्र कला के रूप में प्रदर्शन किया है जिसके अंतर्गत आवश्यक दृष्टिकोणों को तकनीकी रूप में मानचित्रों में दर्शाया गया है। मानचित्रीकरण में अभिकलित्र विधा के साथ ही भारतीय सर्वेक्षण विभाग के धरातलीय पत्रकों को आधार बनाया गया है। धरातल पत्रक संख्या G43W9, G43W6, G43W13 एवं G43W14 आदि को सम्मिलित किया गया है। इनके अतिरिक्त शोध अध्ययन में सारणी द्वारा आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण कर आरेख निरूपण से उनके विशद विश्लेषण से परिणाम प्राप्त किये है।

अध्ययन विषय का महत्व

विषय की महत्ता का आधार अत्यन्त ही व्यापक है। भारत में पिछले कुछ दशकों में अंधाधुंध वन कटाई से परिस्थितिकी में जो विषमता आई है उसको दूर करने के लिए प्रभावी कदम उठाने होंगे। समय की मांग है कि वन्य जीवों के लिए मौजूदा आरक्षित वन क्षेत्रों का ही केवल ठीक प्रकार रख–रखाव न किया जाए बल्कि अधिक से अधिक क्षेत्रों को आरक्षित और विकसित किया जाए। राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य और जीव–मण्डल ऐसे आरक्षित क्षेत्र है जहाँ वन्य जीव प्राकृतिक वातावरण में स्वच्छंदता से रह सकते हैं और फल–फूल सकते हैं। इनके विकसित होने से वातावरण में उत्पन्न विकृति समाप्त हो सकती है और बिगड़ी हुई पारिस्थितिकी का पुनरूद्धार किया जा सकता है।

शोधार्थी द्वारा किया जा रहा शोध कार्य हाड़ौती प्रदेश में बड़े पैमाने पर ऐसी जानकारी के साथ एक व्यवस्थित जैव–विविधता संरक्षण योजना विकसित करने में सहायता करेगी और मुख्य रुप से एक बड़ी जैव विविधता संरक्षण इकाई या हाड़ौती प्रदेश की जैव–विविधता संरक्षण इकाई की दिशा में काम करेगा। इसके अलावा एकत्र की गई जानकारी एक मॉडल के रुप में काम करेगी जो सम्बन्धित हितधारकों के लिए रूचि के परिदृश्य की स्थिति को प्रदर्शित करने में सहायता करेगी और चयन करने के लिए भी काम करेगी।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

राजस्थान का दक्षिणी–पूर्वी क्षेत्र एक विशिष्ट भौगोलिक एवं सांस्कृतिक इकाई है। इसके अन्तर्गत बाराँ, बून्दी, झालावाड़ एवं कोटा जिलों को शामिल किया गया है। इसका अक्षांशीय विस्तार $23^0$51' से $25^0$51' उत्तरी अक्षांश एवं देशान्तरीय विस्तार $75^0$15' से $77^0$26' पूर्वी देशान्तर तक है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र 24295.54 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। (मानचित्र संख्या 01)

राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी राजस्थान ग्रामीण परिदृश्य के रूप से मानव निवास, आर्द्र भूमि, घास के मैदान व प्राकृतिक वनस्पति से संरक्षित है। इस प्रदेश की लगभग 6459.13 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर प्राकृतिक वनस्पति आच्छादित है जिसमें से 2816.49 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र घोषित किया गया है जो कि इस प्रदेश के एक चौथाई भाग पर है।

MAP-1

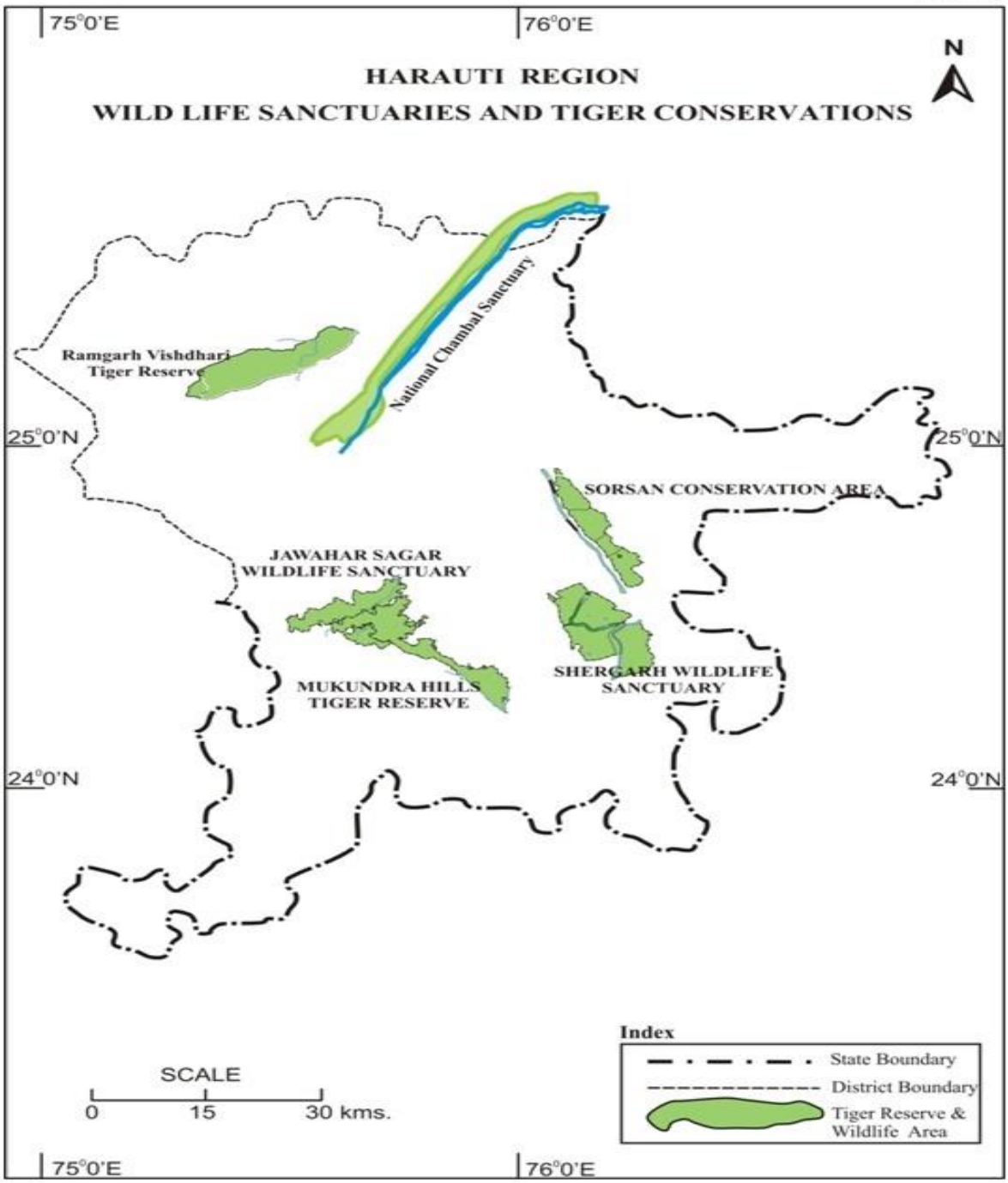

हाड़ौती प्रदेश में मिलने वाले वन्यजीवों का तुलनात्मक अध्ययन

हाड़ौती प्रदेश के प्रमुख वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र मुकुंदरा हिल्स टाईगर रिजर्व अभयारण्य, रामगढ़ विषधारी टाईगर रिजर्व, चम्बल राष्ट्रीय घड़ियाल अभयारण्य, जवाहर सागर अभयारण्य, शेरगढ़ वन्य जीव अभयारण्य एवं सोरसन वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र आदि। यहाँ पर वन्य जीवों में 22 प्रकार के स्तनधारी जीव की विभिन्न प्रजातियाँ मिलती है जैसे– बाघ तेंदुआ बघेरा, भालू, चिंकारा, सियार, काला हिरण, जंगली सुअर, चितल, लंगूर, बिज्जू, चौसिंगा, जंगली बिल्ली, नेवला, नीलगाय, सेही, जरख तथा भेड़िया आदि वन्य जीव पाये जाते है।

तालिका 1 : हाड़ौती प्रदेश में मिलने वाले वन्यजीवों का तुलनात्मक अध्ययन (2015 से 2020 के मध्य)

क्र.सं.	वन्य जीव का नाम	2015	2020	कमी व वृद्धि
1	बाघ	2	6	4
2	तेंदुआ	14	17	3
3	बघेरा	17	32	14
4	भालू	50	68	18
5	सियार	530	771	241
6	जरख	149	293	144
7	भेड़िया	221	315	94
8	लकड़बगा	93	123	30
9	जंगली सुअर	1921	2268	347
10	लंगूर	4314	7313	2999
11	नील गाय	3930	6446	2516
12	सांभर	24	24	0
13	काला हिरण	2434	2412	–12
14	चिंकारा	473	648	175
15	चितल	229	405	176
16	मगरमच्छ	1337	1991	654
17	घड़ियाल	870	1025	155
18	खरगोश	2315	2248	–67
19	नेवला	388	678	290
20	लोमड़ी	147	203	56

स्त्रोतः Wild Animals Census Year -2015-2020 (Addl Pr. Chief Consevator of forests & Chief Wildilife

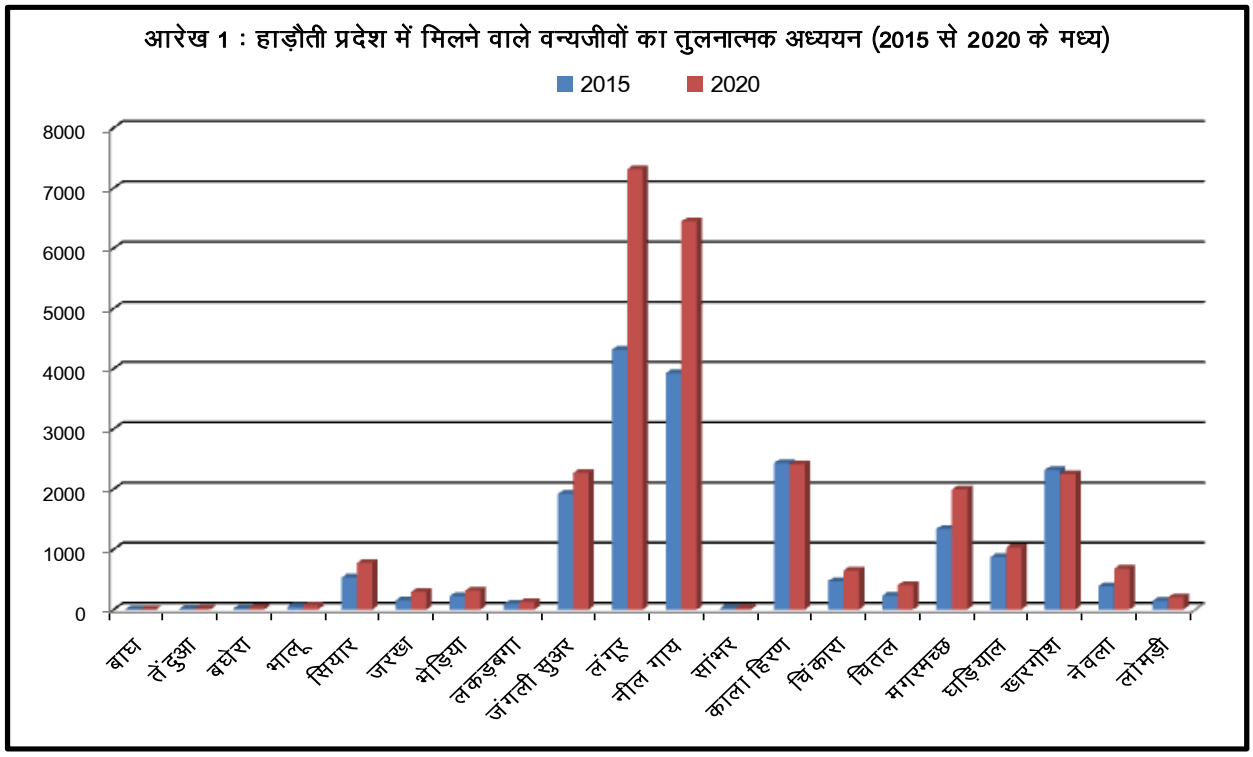

तलिका 1 के अनुसार हाड़ौती प्रदेश में 2015 में बाघों की संख्या 2, तेदुआ 14, बघेरा 17, भालू 50, सियार 530, जरख 149, भेड़िया 221, लकड़बगा 93, जंगली सुअर 1921,लगूर 4314,नील गाय 3930, सांभर 24, काला हिरण 2434, चिकारा 473,चितल 229, मगरमच्छ 1337, घडियाल 870, खरगोश 2315, नेवला 388, एवं लोमडी 147 थे जो कि 2020 में बाघों की संख्या 6, तेदुआ17, बघेरा 32, भालू 68, सियार 771, जरख 293 भेड़िया 315, लकड़बगा 123, जंगली सुअर 2268, लंगूर 7313, नील गाय 6446, सांभर 24, काला हिरण 2412, चिकारा 648, चिंतल 405, मगरमच्छ 1991, घडियाल 1025, खरगोश 2248, नेवला 678, एवं लोमडी 203 हो गयी हैं।

2015 से 2020 के मध्य हाड़ौती प्रदेश में बाघ 4, तेंदुआ 3, बघेरा 14, भालू 18, सियार 241, जरख 144, भेड़िया 94, लकड़बगा 30, जंगली सूअर 347, नीलगाय 2999, चिंकारा 175, मगरमच्छ 654, घड़ियाल 155, की वृद्वि होती है एवं कला हिरण 12 की कमी होती हैं। प्रदेश के अधिकांश वन्य जीवों में वृद्धि होती जा रही है जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न संरक्षण की योजनाएं एवं जागरूकता का ही परिणाम हैं।

सुझाव

वन्य जीवों के संरक्षण के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए। सरकार द्वारा पहले से ही संरक्षण उद्धेश्यों के लिए काम कर रही कई नीतियाँ, योजनाएं और पहल जारी है। सरकार को गांवों में वन सुरक्षा समेत यहाँ बनाने और जागरूकता फैलाने और वनों की कटाई को रोकने के लिए काम करना चाहिए। वन्य जीव संरक्षण क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का व्यापक विदोहन विनाशकारी है। केन्द्र, राज्य, हाड़ौती प्रदेश के ग्रामीण स्तर तक सुझावों को अंगीकार कर व्यावहारिक धरातल पर लागू करने हेतु **शोधार्थी द्वारा सुझाव प्रस्तुत है–**

- परिवहन नियंत्रित हेतु सड़क व रेलवे लाईन के दोनों ओर समानान्तर पशुसंरक्षक (Cattle Guard) लगाये जाये।
- हाड़ौती के सघन वन क्षेत्र शाहबाद रिजर्व में बाघ, चीता आदि के प्रवेश की व्यवस्था पर ध्यान दिया जाये ताकि सीमावर्ती क्षेत्र में वन्य जीवों के हमलों को रोका जा सके।
- सभी संरक्षण क्षेत्रों में वाटर पाइंट, वाच टॉवर, रेन शेल्टर बनाये जाये।
- वन्य जीवों के लिए हर मौसम में पानी की उपलब्धता के लिए उपलब्ध तलाईयों, मिनी तालाबों, पौखरों का पुनरूद्धार किया जाना वांछित है।
- वन्य जीवों की स्थिति को सुनिश्चित करने हेतु नवीनीकृत रेडियो कॉलर व वायरलैस तकनीकी का उपयोग किया जाये जिससे उनकी आवाजाही पर सतत् निगरानी रखी जा सके।
- शिकारियों को कठोर दण्ड़ के साथ–साथ उनकी करतूतों को बेनकाब करना चाहिए जिससे जन समुदाय को उनके बारे में सही जानकारी रहे, जिससे समाज की नजरों में ये सम्मानित न होकर अपराधी दृष्टि से देखे जाए।
- संरक्षण क्षेत्र से ग्रामीणों की स्वैच्छिक स्थानांतरण को बढ़ावा देकर संरक्षण में भागीदार बनाया जाये।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि हाड़ौती प्रदेश में 2015से 2020 के मध्य वन्य जीवों की संख्या में लगातार वृद्धि नजर आती है। जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न संरक्षण की योजनाएं एवं जागरूकता का ही परिणाम हैं। हाड़ौती प्रदेश में शाकाहारी वन्य जीवों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि देखने को मिलती है जिसको देखते हुए इस प्रदेश के सभी संरक्षण क्षेत्र में मांसाहारी वन्य जीव जैसे– बाघ, बघेरा, चीता आदि की आबादी में वृद्धि होने

की संभावनाएं नजर आती है और बाघों को बसाने के लिए सरकार द्वारा इस प्रदेश के दो वन्य जीव संरक्षण क्षेत्र को बाघ संरक्षण क्षेत्र बनाया गया कुछ वन्य जीवों की संख्या में कमी भी देखने को मिलती है या उनकी वृद्धि बहुत कम होती हुई है इसके प्रमुख कारण वन्य जीवों का शिकार, वनों का विनास, भूमि उपयोग में परिवर्तन, संरक्षण क्षेत्र से गुजरने वाली सड़क वह रेल लाइन से दुर्घटनाएं एवं जल संसाधनों में कमी आदि का होना है। अतः हम सबको इन सभी समस्याओं के निवारण के लिए उपाय अपनाने होंगे ताकि भविष्य में वन्य जीवों की आबादी को संतुलित बनाए जा सकेगा और हाड़ौती प्रदेश में वन्य जीवों के महत्व को सुरक्षित रखा जा सकेगा।

वन्य जीव संरक्षण क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों के व्यापक विदोहन पर इस हेतु राज्य व केन्द्रीय स्तर पर समायोजन स्थापित करते हुए जनभागीदारी में वृद्धि किये जाने पर ही हाड़ौती प्रदेश के साथ ही सम्पूर्ण प्रदेश में वन्य जीव संरक्षण के साथ ही पर्यावरण के नये आयाम स्थापित होकर सतत् विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। वास्तव में विकास की अंधी दौड़ में सुझावों को सुनने व क्रियान्वयन करने का समय किसी के पास नहीं है इसकी गम्भीरता को देखते हुए व्यापक स्तर पर ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

संदर्भ –

1. https://forest.rajasthan.gov.in/wild-life/shergarh-sanctuary-.html
2. https://forest.rajasthan.gov.in /forest/
3. कार्यालय उप वन संरक्षक, वन्य जीव, कोटा (राज.)
4. शर्मा, डॉ. निरंजन, शर्मा, डॉ. बाबूलाल (2002) पादप भूगोल, रोहिणी बुक्स जयपुर,
5. गुप्ता, डॉ. मोहनलाल (2011) राजस्थान में वन एवं वन्य–जीव, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ. 18
6. गुप्ता, रामचरण लाल, (2018) राजस्थन की वन्य सम्पदा एवं वन्य जीव, ऐलोरा प्रिण्टर्स एण्ड पब्लिशर्स जयपुर, पृष्ठ 57, ISBN-978-93-8207-17-6
7. यादव, मुकेश, कुमार– वन्य जीव संरक्षण में पर्यटन विकास कि संभावनाओं का अध्ययन हाड़ौती प्रदेश के संदर्भ में, जूनी ख्यात शोध पत्रिका, Vol&13; Issue 10; No-01, Ocober(2023) ISSN:2278–4632
8. तिवारी, डॉ. अजय (2013)– वन्य जीव संरक्षण एवं नियंत्रण (जैव–विविधता एवं ईको पर्यटन के संदर्भ में), शब्द–ब्रह्म, भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, सितम्बर, 2013, ISSN 2320–0871